पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.09.2017 इस अंक का मल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868002130

बैंकॉक में आर्य युवक परिषद्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली का 80 सदस्यीय दल रविवार, 1 अक्तूबर को आर्य समाज बैंकांक में यज्ञ, भजन व प्रवचन का कार्यक्रम करेगा। यह दिल्ली से 28 सितम्बर को थाईलेन्ड जायेगे व 4 अक्तूबर को दिल्ली वापिसी होगी। परिषद् के मंत्री श्री देवेन्द्र भगत यात्रा का नेतृत्व करेंगे।

वर्ष-34 अंक-08 आश्विन-2074 दयानन्दाब्द 193 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2017 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.09.2017, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 39वें स्थापना दिवस पर 'राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन' सम्पन्न

आर्य समाज का कुरीतियों के उन्मूलन में महत्वपूर्ण योगदान–विजेन्द्र गुप्ता, नेता प्रतिपक्ष, दिल्ली विधान सभा

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन में मुख्य अतिथि सांसद तरूण विजय, स्वामी आर्यवेश जी, सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य व समाज के मंत्री डा.रविकान्त जी। द्वितीय चित्र–नेता प्रतिपक्ष दिल्ली विधानसभा विजेन्द्र गुप्ता का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, सांसद तरूण विजय, योगेश आत्रेय, पार्षद आलोक शर्मा, धर्मपाल आर्य व पूर्व पार्षद यशपाल आर्य।

नई दिल्ली। रविवार, 3 सितम्बर 2017, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के 39वें स्थापना दिवस पर आर्य समाज, दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली में "राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन" का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से सैंकड़ों आर्य युवा प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

दिल्ली विधान सभा के नेता प्रतिपक्ष विजेन्द्र गुप्ता ने कहा कि आर्य समाज का देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा जिसे भुलाया नहीं जा सकता, लेकिन आज समाज में व्यापत भ्रष्टाचार आदि बुराईयां भी आर्यो के लिए एक चुनौती है। आर्य समाज का कुरीतियों के उन्मूलन में सदैव योगदान रहा है, आज के हालात में आर्य समाज की जिम्मेदारी ओर अधिक बढ़ गयी है, उसे आपने आगे आकर पूरा करना है।

सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी (सीकर) ने कहा कि आज आर्य समाज को वही पुराने ओजपूर्ण स्वरूप में लाने की आवश्यकता है तभी हमारी संस्कृति जीवित रह पायेगी। हमें युवा पीढ़ी को पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरूडम वाद से बचा कर उनमें नैतिक शिक्षा, देशभक्ति, ईमानदारी, जातिवाद विहीन समाज की संरचना के लिए कार्य करना होगा। उन्होंने शारीरिक उन्नति की ओर नौजवानों से ध्यान देने को कहा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आज समाज में बढ़ता हुआ पाखण्ड–अन्धविश्वास चिन्ता का विषय है जिससे युवाओं में धर्म के प्रति अरूचि हो रही है, आर्य युवा पाखण्ड और अन्धविश्वास के प्रति लोगों को जनजागृत करेंगे और धर्म के सच्चे वैदिक स्वरूप से अवगत करवायेगे। परिषद् युवा पीढ़ी को संस्कारित व चरित्रवान बनाने के लिए व्यापक अभियान चलायेगी, उन्होंने कहा कि चरित्र निर्माण, देश भक्त युवा पीढ़ी का निर्माण आज राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्य वेश ने कहा कि आज आर्य समाज की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गयी है, आज महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र व आदर्शो को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समाज में चारों ओर अन्धविश्वास व पाखण्ड बढ़ रहा है, आर्य युवकों को चाहिए की वह इन कुरीतियों खिलाफ आगे आकर जनजागरण अभियान चलायें।

सांसद तरूण विजय ने कहा कि चरित्रवान युवा राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है और राष्ट्र का भविष्य ऐसे ही नौजवानों पर है। आर्य समाज को दिग्भ्रमित युवकों को सही दिशा व राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत करने के लिए व्यापक अभियान चलाने की आवश्यकता है। समारोह का उद्घाटन 'ओउम्' ध्वज फहरा कर समाजसेवी दर्शन कुमार अग्निहोत्री ने किया।

पार्षद आलोक शर्मा, पूर्व पार्षद यशपाल आर्य, वैदिक विद्वान चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य रमेशचन्द शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, योगेश आत्रेय, रामकृष्ण शास्त्री (राजस्थान), सुभाष बब्बर (जम्मू), विजय राठौर (सिहोर), प.

(शेष पृष्ठ 3 पर)

मिशन–25 यानि की 12 से 25 वर्ष तक के युवाओं को आर्य समाज में दीक्षित करने का अभियान : ऐतिहासिक आर्य समाज दीवान हाल में नयी युवी शक्ति

अंधविश्वास निर्मूलन से ही मनुष्य जाति की उन्नति सम्भव

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मनुष्य जीवन में होने वाले रोगों का प्रमुख कारण प्रायः कुपथ्य होता है। संसार में प्रत्येक कार्य के पीछे कारण होता है। यदि कारण न हो तो कार्य नहीं हो सकता। यह हमारी सृष्टि ईश्वर ने उपादान कारण 'प्रकृति' अर्थात् इस प्रकृति के सत्व, रजस् व तमस् सूक्ष्म कणों से बनाई है। यदि प्रकृति के त्रिगुणों वाले कण न होते तो इस सृष्टि का निर्माण सम्भव नहीं था। इसी प्रकार रोग के अनेक कारण होते हैं। इन कारणों से बचने के लिए स्वास्थ्य के नियम बनायें गये हैं जिसका पालन करने से मनुष्य स्वस्थ रहता है। मनुष्य अल्पज्ञ है। इस कारण अनचाहे वह अपनी अज्ञानतावश व असावधानी से रोगों से संक्रमित हो जाता है और फिर उपचार व पथ्य से रोग के कारणों को दूर करके स्वस्थ भी हो जाता है। अनेक असाध्य रोग भी होते हैं। ऐसे रोगों का उपचार ढूंढा जा रहा है। शायद भविष्य में हमारे विद्वान व वैज्ञानिक उन्हें ढूंढ लें परन्तु कुपथ्य से बचना होगा और अपना ज्ञान बढ़ा कर स्वास्थ्य के नियमों का अधिकाधिक पालन करना ही होगा। स्वास्थ्य के नियमों की ही तरह सामाजिक जीवन व राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए देश के नागरिकों को अल्पज्ञता व अज्ञानता को दूर कर ज्ञान की प्राप्ति को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाकर उसका पालन करना होता है। यदि ऐसा करते हैं तो हम, हमारा समाज व देश उन्नति के शिखर की ओर बढ़ता है और न करने पर घोर पतन होता है। हम व देशवासी दुःखों के गड्ढे में गिरते हैं। ऐसा ही महाभारत के बाद मुख्यतः मध्यकाल में हुआ। आज स्थिति यह है कि देश अज्ञान व अन्धविश्वासों से भरा हुआ है। इस कारण समाज समाज न होकर "अज्ञानजन्य मिथ्या परम्पराओं व विषमताओं का मानव समूह" बन गया है। समाज को समाज अर्थात् सभी मनुष्यों में समानता व न्याय का व्यवहार कराने के लिए उनके अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड व कुरीतियों को दूर करना होगा। यह काम ऋषियों की उपस्थिति के कारण सृष्टि के आरम्भ से महाभारतकाल तक तो पृथक से करने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी परन्तु उसके बाद ऋषियों के अभाव में अज्ञान व अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं कुरीतियां वा मिथ्या परम्परायें आरम्भ हो गईं। इसका परिणाम देश की गुलामी था। इनके कारण देश को अनेक विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा और आज भी देश की धार्मिक व सामाजिक स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। इस स्थिति को दूर कर विजय पाने के लिए देश से अज्ञान व अन्धविश्वासों का समूल नाश व विद्या की वृद्धि कर इनका उन्मूलन करना होगा।

अन्धविश्वास क्या है? यह अंधविश्वास ऐसा विश्वास है जो अन्धा है और जिसमें ज्ञानरहित विश्वास है। लोग ईश्वर को मानते हैं। यह उनका विश्वास है परन्तु अज्ञानता के कारण दूसरों की देखा–देखी व स्वार्थी मनुष्यों के छल के कारण वह बिना जाने व सोचे उसी मार्ग पर चलने लगते हैं। यदि कोई मूर्ति पूजा करे तो भी जड़, भावना व संवेदना शून्य, मूर्ति को खिलाने व उसे धन देने की क्या आवश्यकता है। क्या मूर्ति को दिया भोजन वह ग्रहण करती है? आप स्वयं प्रयोग करके देख लीजिए। मन्दिरों में हनुमान जी की मूर्ति को मंगलवार के दिन बूंदी वा लड्डू आदि का प्रसाद चढ़ाया जाता है। पुजारी जी कुछ भाग मूर्ति के मुंह पर लगा देते हैं। सप्ताह व उससे अधिक समय में भी हनुमान जी की कल्पित मूर्ति द्वारा वह खाया नहीं जाता। कुछ समय बाद उस पर मक्खियां बैठती हैं या यह चींटियों का भोजन बनता है। इसी प्रकार जो धन मन्दिरों व मूर्तियों पर चढ़ाते हैं, क्या मूर्ति को उसकी आवश्यकता है? वह धन व पदार्थ किसकी जेब में जाते हैं और उससे कितना धर्म और क्या क्या अधर्म होते हैं, यह कोई नहीं जानता? अतः बिना जाने व सोचे समझे किये जाने वाले धर्म–कार्य अधिकांशतः अन्धविश्वास की श्रेणी में आते हैं। इसी प्रकार से अन्ध–परम्परायें होती हैं। जन्मना जातिवाद ऐसी ही प्रथा है। संसार में मनुष्य माता व पिता के द्वारा जन्म लेते हैं। ईश्वर ने किसी के चेहरे व अन्य स्थान पर उसके अमुक अमुक जाति के होने का स्टीकर नहीं लगाया। यह जन्मना जाति व जाति सूचक शब्द हमारे ही अल्पज्ञानी पूवजों की देन हैं। इन जातिसूचक शब्दों में से कुछ तो उनके कार्य व गांव आदि स्थान के सूचक भी होते हैं। परन्तु लोगों के गांव व स्थान बदल गये और समय के साथ काम भी बदल गये परन्तु माथुर जाति सूचक शब्द जो मथुरा निवासी लोगों के लिए प्रयोग में लाया जाता था, वह नहीं बदला। हमारे पिता भवन निर्माण के कार्य से जुड़े थे। हमें पढ़ाया। हमने एक दुकान पर काम किया। वहां हम लोगों को टाईपिंग सिखाने लगे। हम विज्ञान स्नातक थे। पहले हमारी लिपिक के रूप में राज्य सरकार के कार्यालय में नौकरी लगी। फिर दूसरी केन्द्रीय सरकार के संस्थान में लगी। विज्ञान स्नातक होने से हम तकनीकी सहायक बने, फिर 5 बार प्रोन्नत होकर वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी बन गये। इसी प्रकार से हमारे बच्चे भिन्न भिन्न काम कर रहे हैं। दो बैंक में अधिकारी हैं और एक अन्य सरकारी विभाग में। अब इन्हें हमारे पूर्वजों की जाति सूचक शब्दों से सम्बोधित किया जाये व उसके अनुसार हमारे साथ लोगों द्वारा सामाजिक व्यवहार हो तो यह उचित नहीं कहा जा सकता? अतः जन्मना जाति भी एक प्रकार का अन्धविश्वास व सामाजिक रोग है जिसने आर्य हिन्दू जाति को कमजोर व दुर्बल बनाया है। ऐसा ही शिक्षा की प्राप्ति के अधिकारों को लेकर है। हमारे समाज के तथाकथित ब्राह्मणों ने महिलाओं, शूद्रो, अन्त्यजो व निर्धनों के शिक्षा के अधिकार को ही छीन लिया। किसी ने घोषणा कर दी कि स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है और युगों तक यही भ्रान्त धारणा समान में विद्यमान रही। स्वामी दयानन्द जी के प्रयासों व वेद प्रमाण देने पर यह प्रथा व परम्परा कमजोर हुई परन्तु आज शिक्षा का व्यापारीकरण हो जाने से निर्धन व दुर्बल लोगों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन व असम्भव सा हो गया है। यह शिक्षा के व्यापारीकरण, मुनाफाखोरी अथवा स्वार्थ की प्रवृत्ति के कारण हो रहा है जो देश की लिए अत्यन्त हानिकारक व घातक है। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

अन्धविश्वास दूर करना आवश्यक क्यों है? इसका उत्तर इस प्रकार से है। जैसे एक अबोध बालक को माता–पिता व बाद में स्कूल के शिक्षक ज्ञान कराते हैं व उसकी अविद्या को दूर करते हैं। जैसे एक सद्–चिकित्सक रोगी को औषधि एवं पथ्य से स्वस्थ करने का प्रयत्न करता है तथा देश के पुलिसकर्मी समाज में अपराध को रोकने के लिए बुरे लोगों को पकड़ कर उन्हें जेल यातनायें आदि देकर उनका सुधार करने का प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार से धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास भी न केवल मनुष्य विशेष अपितु समाज व देश को भी निर्बल बनाते हैं। अतः अन्धविश्वासों व मिथ्या परम्पराओं को पहचानना व उसका निदान करना किसी एक मनुष्य या संस्था का काम नहीं अपितु समूचे समाज व देश का काम है। इस काम में सबसे बड़ी बाधा लोगों का अज्ञान व उनके निजी स्वार्थ प्रतीत होते हैं। लोग धार्मिक व ज्ञान पर आधारित सामाजिक परम्पराओं का ज्ञान नहीं रखते। उन्हें इसके लिए एक धार्मिक नेता व आचार्य की आवश्यकता अनुभव होती है। इस स्थिति को जान व समझकर बहुत से कुपात्र यह काम करना आरम्भ कर देते हैं और अपनी दुर्वासनाओं की जी भर कर पूर्ति करते हैं। इसके कुछ उदाहरण अभी देश व समाज के सामने आयें हैं। ऐसे बड़े बड़े धार्मिक नेता जेल में हैं। यह तो एक बानगी मात्र है। ऐसा भी नहीं है कि सभी धार्मिक आचार्य, सामाजिक नेता व उनके पूर्व आचार्य भी ऐसे ही रहे हों, परन्तु एक बात तो निश्चित है कि यह सभी आचार्य ईश्वरीय ज्ञान वेद के विपरीत बहुत सी बातें व कृत्य करते हैं। कुछ सीमा तक इनका स्वार्थ भी सिद्ध होता है। यह आचार्यगण तपस्वी व त्याग का जीवन भी व्यतीत नहीं करते जैसा कि हमारे ऋषि व पूर्व धार्मिक पुरुष करते थे। संस्कृत व शास्त्रों की इनकी योग्यता न के बराबर या अति अल्प होती है। ऐसे अनेक कारणों से यह सभी आचार्य अज्ञानता व अन्धविश्वास ही परोसते हैं व ज्ञानी होने का दम्भ भरते हैं। इनकी अविद्या क्योंकि केवल वेद के ज्ञानी विद्वान ही पकड़ सकते हैं, इसी कारण यह उनसे शास्त्रार्थ या वार्तालाप भी नहीं करते। इसके पीछे इनका डर होता है। इससे पता चलता है कि किस प्रकार से देश व समाज में अन्धविश्वास व अविद्या बढ़ रही है।

अन्धविश्वास का कारण अविद्या व अज्ञान है। अविद्या व अज्ञान का नाश केवल वेद और उसके अनुकूल ग्रन्थ, शास्त्रों व पुस्तकों से होता है। लगभग 150 वर्ष पूर्व तक समस्त वैदिक साहित्य संस्कृत भाषा और वह भी अधिकांश मन्त्रों, श्लोकों, पद्य व सूत्रों आदि में होता था जिसे समझना कठिन था। ऋषि दयानन्द की कृपा से समस्त वैदिक साहित्य व उसका सार आज हिन्दी व देश की अन्य भाषाओं सहित अंग्रेजी में भी उपलब्ध है। एक ही ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में समस्त वैदिक साहित्य वा शास्त्रों का ज्ञान उपलब्ध है। महाभारत के उत्तरकालीन देशी विदेशी मत, पंथ, मजहब व सम्प्रदायों की मान्यताओं का परिचय एवं उनकी समीक्षा व खण्डन भी सत्यार्थप्रकाश में उपलब्ध होता है। इतना ही नहीं इस ग्रन्थ में यह भी बताया गया है कि संसार के सभी मनुष्यों का केवल एक ही धर्म 'वैदिक धर्म' है। वैदिक धर्म में सभी मत मतान्तरों की सभी अच्छी बातों का समावेश है और जो मिथ्या बातें मत–मतान्तरों में हैं, वह ऋषि दयानन्द जी के अनुसार उनके मत के आचार्यों व उनकी अपने मतों की हैं। ऋषि दयानन्द जी की यह भी महती कृपा है कि उन्होंने संसार के एक सत्यमत के सिद्धान्त व मान्यतायें जो सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से माननीय व धारण करने योग्य है, उसे कुछ ही पृष्ठों में 'स्वमन्तव्यामन्तव्य' के नाम से प्रस्तुत व उपलब्ध कराया है। यदि संसार में सभी मताचार्य व उनके अनुयायी मनुष्य अपनी साम्प्रदायिक बातें छोड़ कर केवल सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में उल्लेखित मान्यताओं वा सिद्धान्तों को ही स्वीकार कर लें, तो संसार से लोभ, हिंसा, अन्याय, घृणा, स्वार्थ, अशान्ति, रोग व शोक आदि सभी का निवारण हो सकता है। जहां सत्यार्थप्रकाश और उसकी मान्यतायें हांगी, वहां असत्य, अविद्या, अज्ञान व अन्धविश्वास हो ही नहीं सकते। मत–पंथ–सम्प्रदाय–मजहब आदि की भी वहां आवश्यकता नहीं होगी। ऐसे समाज व देश में कोई ढोंगी व पाखण्डी बाबा नहीं होगा जो बहनों, मां–बेटियों सहित देश के लोगों का आर्थिक, मानसिक व शारीरिक शोषण करे। वह समाज व देश ज्ञान व विज्ञान सम्पन्न व सभी सुखों से पूरित होगा। आईये, सत्यार्थप्रकाश पढ़ने और उसकी सत्य शिक्षाओं को धारण करने का व्रत लेकर अपना, समाज, देश व विश्व का कल्याण करने की पहल करें।

— 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के 39वें राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन में दिनांक 3 सितम्बर 2017 को पारित प्रस्ताव

1. यह सभा देश में बढ़ती हुई अन्धविश्वास व पाखण्ड की घटनाओं पर चिन्ता व्यक्त करती है,आर्य समाज की युवा शक्ति को आह्वान करती है कि इसके विरूद्धव्यापक जनजागरण अभियान चलाये । इलेक्ट्रिोनिक्स चैनल से अनुरोध करती है कि वह समाज हित में भ्रामक विज्ञापन न दिखायें।
2. यह सभा केन्द्र सरकार से मांग करती है कि जम्मू कश्मीर से धारा 370 अविलम्ब समाप्त की जाये और पूरे देश के लिये समान आचार संहिता लागू की जाये।
3. अलगाववाद व आंतकवाद पूरी मानवता के लिये खतरा है,इसके पोषक तत्वों व संरक्षकों को सख्ती से कुचला जाये।
4. जीव हत्या विशेष कर गौ हत्या पर पूरे भारत में प्रतिबन्ध लगाया जाये।
5. आज की शिक्षा पद्धति में अत्यन्त सुधार की आवश्यकता है,उसमें नैतिकता,देश भक्ति,मानवीय गुणों का समावेश किया जाये जिससे चरित्रवान, संस्कारित, देश भक्त युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके।
6. कोई किनता भी करे परन्तु स्वदेशी राजा सर्वोतम होता है इसी भावना को लेकर स्वदेशी,संस्कृत और हिन्दी भाषा के प्रोत्साहन के लिय कार्य प्रणाली विकसित की जाये।
7. शराब व नशे की चीजें समाज के लिये घातक हैं, युवा पीढ़ी इससे बर्बाद हो रही है इससे उन्हें बचाने के लिय अधिकाधिक कार्य किया जाये और प्रचार विज्ञापन पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।
8. शिक्षा पद्धति को रोजगार मूलक बनाया जाये जिससे युवा सम्मान पूर्वक रोजगार कर सकें और जातिगत आधार पर किसी भी प्रकार का आरक्षण समाप्त किया जाये।
9. गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति व्यक्ति को शिक्षा के साथ साथ संस्कार प्रदान करती है उसे प्रोत्साहन देने की कार्य योजना बनायी जाये।
10. पश्चिमी बंगाल व देश के कई हिस्सों में हिन्दुओं पर हिंसा, अत्याचार व लह जिहाद की घटनायें बहुसंख्यक समाज के साथ अन्याय है, जहां हिन्दू अल्पसंख्यक है वहां उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाये ।

भवदीय

डा.अनिल आर्य	महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री
सम्पर्क: 9810117464	9013137070

जहां नहीं होता कभी विश्राम — ओ३म् — आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् प्रस्तुत करता है

सहयोग : भारत विकास परिषद् पीतमपुरा शाखा

134वें महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में संगीत संध्या

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

शुक्रवार, 20 अक्तुबर, 2017, सायं 4.00 से 8.00 बजे तक

स्थान : दिल्ली हाट पीतमपुरा, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन नेताजी सुभाष पैलेस)

11 कुण्डीय यज्ञ सायं 4 से 5 तक, ब्रह्मा: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

मुख्य यजमानः सर्व श्री राजेश जुनेजा, यज्ञदत्त आर्य,सुरेश आर्य, धर्मदेव खुराना,डॉ. राजीव चावला,तिलक चांदना नरेन्द्र कालड़ा, राजीव आर्य, एस.के. आहुजा, ओमप्रकाश गुप्ता, धर्मपाल परमार, विनोद कालरा, सुरेन्द्र मानकटाला

गायक कलाकार :- नरेन्द्र आर्य सुमन ★ सुदेश आर्या ★ अंकित उपाध्याय

मुख्य अतिथिः श्री तरूण चुघ (राष्ट्रीय मंत्री भाजपा), **श्री विजेन्द्र गुप्ता** (नेता प्रतिपक्ष दिल्ली)

अध्यक्षता : श्री प्रदीप तायल (पाईटैक्स ज्वैलर्स, नेताजी सुभाष पैलेस, पीतमपुरा)

विशिष्ट अतिथिः श्रीमती अंजु जैन (चेयरमैन) व श्री योगेश वर्मा (डिप्टी चेयरमैन) केशवपुरम जोन

गरिमामय उपस्थितिः सर्व श्री आनन्द चौहान, दर्शन अग्निहोत्री, ठाकुर विक्रम सिंह, मायाप्रकाश त्यागी, आलोक शर्मा (पार्षद), कैलाश सांकला (पार्षद), डॉ. महेन्द्र नागपाल (पूर्व विधायक), सुभाष आर्य (पूर्व महापौर), श्रीमती रेखा गुप्ता (पूर्व पार्षद), राकेश खुल्लर, सुरेन्द्र कोहली, पूजा मदान (पार्षद), तिलकराज कटारिया (पार्षद), यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), रमेशचन्द शास्त्री, ममता नागपाल (पूर्व पार्षद), डॉ. शोभा विजेन्द्र (पूर्व पार्षद), नरेन्द्र अरोड़ा, डॉ. अमित नागपाल, राजकुमार जैन, संजीव मिगलानी, सुभाष गुप्ता, भारत भूषण दीवान, रश्मि गोयल, रमेश राठी, सतीश गुप्ता, एस.के. वाधवा, महेशचन्द्र शर्मा (पूर्व महापौर) दीपक सेठिया, सुरेश पौद्दार, घनश्याम गुप्ता, सुरेश अग्रवाल, नरेन्द्र सिंघल, सुरेन्द्र मोहन लाम्बा, सुनील गुप्ता, रवीन्द्र आर्य, प्रवीन तायल, अमित मान, नीरज रायजादा, गायत्री मीना, राजीव मुखी, उर्मिला मनचंदा, सरोजिनी दत्ता, प्रेमप्रकाश गोगिया, अनिल मित्रा, प्रदीप गोगिया।

आर्य महिला गौरव अवार्ड से सम्मानित होंगे

श्रीमती अनुराधा नागिया	श्रीमती मंजुला गोयल	श्रीमती ललिता मेहता
श्रीमती संतोष आर्या	श्रीमती इन्द्रा आहुजा	श्रीमती प्रेमलता महाजन
श्रीमती कुसुम गुप्ता	श्रीमती चेरी सहगल	श्रीमती बिन्दु मदान
श्रीमती हर्ष आर्या	श्रीमती संगीता गौतम	श्रीमती ऋतु मल्होत्रा
श्रीमती कमलेश ग्रोवर	श्रीमती मधु खेड़ा	कुमारी मनीषा आर्या

आमंत्रित आर्य नेताः सर्व श्री ओम सपरा (मेट्रो पोलटेन मजिस्ट्रेट), सुरेन्द्र गुप्ता, रवि चड्डा, रविदेव गुप्ता, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, राजेन्द्र लाम्बा, रमेश कुमारी भारद्वाज, चतरसिंह नागर, जितेन्द्र डावर, अमरनाथ बत्रा, जवाहर भाटिया, अमरनाथ गोगिया, सुशील बाली, ओमप्रकाश मनचन्दा, रणसिंह राणा, उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्करणा, अंजू जावा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, अमीरचन्द रखेजा, डॉ. धर्मवीर आर्य, सोहनलाल मुखी, रामकुमार भगत, महेन्द्र टांक, कृष्णा सपरा, वेदप्रकाश, व्रतपाल भगत, शोभा सेतिया, सुषमा अरोड़ा, प्रि. अंजु मेहरोत्रा, बलराज नागपाल, सुशीला सेठी, सुदेश डोगरा, प्रेमकुमार सचदेवा, प्रकाशचंद आर्य, प्रदीप गुप्ता, रामजी दास थरेजा, सुरेन्द्र शास्त्री, वेदप्रभा थरेजा।

ऋषि लंगर — **आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं**

निवेदक

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	योगेश आत्रेय स्वागत अध्यक्ष	दिनेश गर्ग (गुड्डू) स्वागत अध्यक्ष
रामकुमार सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	कृष्णचन्द पाहुजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	देवेन्द्र भगत प्रेस सचिव	प्रवीण आर्य, सुशील आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	वेदप्रकाश आर्य स्वागत मन्त्री
दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री	धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राकेश भटनागर राष्ट्रीय मन्त्री	सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, प्रदीप, वरूण, शिवम प्रबंधक गण	

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9312406810, 9868664800

E-mail: aryayouth@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com

Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

(पृष्ठ 1 का शेष)

धनेश्वर बेहरा (उड़ीसा), मित्रमहेशआर्य (अहमदाबाद), ओमसपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्टेस्ट), वीरेन्द्र योगाचार्य (फरीदाबाद), आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), श्रीकृष्ण दहिया (जीन्द), स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल), ईश आर्य (हिसार), आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, कविता आर्या, प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), ईश आर्य (हिसार), सौरभ गुप्ता, काशीराम, कु.अनिता, कु. मनीषा आर्या आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

विशिष्ट अतिथियों में शिक्षाविद रमेश कुमारी भारद्वाज,आर्य समाज के मंत्री डा.रविकान्त, प्रदेश संचालक रामकुमार सिंह आर्य, यशोवीर आर्य, महेन्द्रसिंह आर्य (नोएडा), कै. अशोक गुलाटी, चतरसिंह नागर, के. एल.राणा, ओमवीर सिंह, सुरेन्द्र शास्त्री, मकेन्द्र कुमार, अजय आर्य (करनाल), रमेश खजुरिया (जम्मू), विनोद बजाज, वैशाली (सहारनपुर), कुंवरपाल आर्य (हापुड़), रोशनलाल आर्य (पिलखुआ), देवेन्द्र भगत, धर्मपाल आर्य, सुरेश आर्य, श्रीकृष्ण दहिया (जीन्द), योगेन्द्र शास्त्री, देवदत आर्य, कवि विजय गुप्त, महावीरसिंह आर्य, हरिचंद आर्य, गोपाल जैन, नरेन्द्र आर्य सुमन, भोपालसिंह आर्य, अमरनाथ बत्रा, प्रभा आर्या आदि उपस्थित थे। आर्य श्रेष्ठी अवार्ड से वैदिक विद्वान आचार्य छविकृष्ण शास्त्री, पहलवान आनन्दप्रकाश आर्य (बांकनेर) व आर्य युवा रत्न अवार्ड से योगेश आत्रेय (खेड़ाखुर्द, दिल्ली, राकेश आर्य (प्रेम नगर), शिवकांत आर्य (गाजियाबाद) को सम्मानित किया गया। श्री सौरभ गुप्ता के निर्देशन में आर्य युवाओं ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन दिखाये। राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र भाई ने परिषद् की विगत उपलब्धियां बताते हुए सभी का आभार व्यक्त किया। प्रदेश महामंत्री अरूण आर्य, विश्वनाथ आर्य, माधव सिंह, अमित आर्य, शिवम मिश्रा, प्रदीप आर्य, वरूण आर्य, साहिल आर्य, भव्या डंग, प्रगति गुप्ता, नेहा, प्राची, गरिमा, दीपक आर्य, अनुज आर्य, गौरव सिंह आदि ने सुन्दर व्यवस्था सम्भाली। प्रातः काल गर्म गर्म आलु, पूरी, हलवा–नाश्ता, दोपहर–कड़ी–चावल, पेठा,चपाती–ऋषि लंगर व सायं काल को गर्मागर्म जलेबी, पकोड़े, चाय का सुन्दर भरपूर प्रबन्ध किया गया था। लगभग 1000–1200 आर्य जनों ने भोजन का आनन्द लिया। कार्यक्रम प्रातः 9 बजे से शाम 5.30 बजे तक निर्बाध चलता रहा, समाप्ति पर भी उस समय 600 लोगों से हाल भरा हुआ था। सभी विद्वानों,दानदाताओं,कार्यकर्ताओं का हार्दिक आभार।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का चुनाव सम्पन्न

श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी–प्रधान, श्री चतरसिंह नागर–महामन्त्री व श्री ओमवीरसिंह आर्य–कोषाध्यक्ष चुने गये, हार्दिक बधाई।

डा.सत्यपाल सिंह का भव्य अभिनन्दन

भारतीय संस्कृति का मूल वेद है हम, वेद, यज्ञ, दयानन्द के मिशन के लिये कार्य करेंगे

-डा.सत्यपाल सिंह, केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री का आह्वान

डा.सत्यपाल सिंह जी का शाल,माला,महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट कर अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,महेन्द्र भाई,गवेन्द्र शास्त्री,रामकुमार आर्य,अरूण आर्य,वेदप्रकाश आर्य। द्वितीय चित्र में आर्य जनता को सम्बोधित करते डा.सत्यपाल सिंह जी।

नई दिल्ली। वीरवार, 7 सितम्बर 2017,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,नई दिल्ली के तत्वावधान में नवनिर्वाचित केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री डा. सत्यपाल सिंह के निवास 121, साउथ एवन्यू नई दिल्ली में भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया । समारोह में आर्य समाज के दिल्ली व आसपास से सैंकड़ों आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए व अपनी शुभकामनायें प्रदान की।

डा.सत्यपाल सिंह ने कहा कि वेद हमारी भारतीय संस्कृति का मूल है और मैं हर जगह वेद की बात करता हूँ। अब हमने जिम्मेदारी सम्भाली है,हमारे सामने काफी चुनौतियां हैं फिर से सही इतिहास लिखवाने व नयी युवा पीढ़ी को बताने की आवश्यकता है। यह आजादी हमें कैसे मिली नये बच्चों को उस संघर्ष व बलिदान का नहीं पता, उसे बताने की आवश्यकता है,लेकिन आप सब आर्य जनों के आशीर्वाद से हम सब कुछ करने में सक्षम हो सकेंगे।

उन्होंने कहा कि हमें अभिवादन में भी नमस्ते के प्रचलन को बढ़ाना देना चाहिये व इसे व्यवहार में भी लाना चाहिये। गुड मौनिंग व गुड नाईट का कोई मतलब नहीं बनता, हमें अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व होना चाहिये।

डा.सत्यपाल सिंह ने आगे कहा कि हम वेदों की शिक्षाओं, संस्कृत भाषा, महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन के प्रचार प्रसार के लिये डट कर कार्य करेंगे। यज्ञीय भावना को यानि त्यागमय जीवन की अवधारणा को जीवन में उतारने की आवश्यकता है। आर्य समाज में भी आज फूट का व पदों की लड़ाई का रोग लग गया है, हमें त्याग भाव से योग्य व्यक्ति को कार्य करने का स्वयम् ही अवसर प्रदान करना चाहिये। आप लोगों का सहयोग मिलेगा तो हम बहुत कुछ करने का मन में सजोंय हैं।

समारोह के संयोजक डा. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्) ने कहा कि अच्छे योग्य विद्वानों की टीम बना कर विकृत इतिहास को ठीक करने का कार्य डा.सत्यपाल जी करेंगे और ऐसी शिक्षा पद्वति विकसित करेंगे जो चरित्रवान,देश भक्त युवा पीढ़ी का निर्माण कर सके। डा.अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया। आचार्य महेन्द्र भाई ने वेद मन्त्रों के पाठ व मधुर भजनों से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

डा. सत्यपाल सिंह जी का शाल, माला, महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट कर अभिनन्दन किया गया। डा.अनिल आर्य ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का उपप्रधान होने के नाते विश्व की समस्त आर्य समाजों की ओर से अभिनन्दन करता हूँ। इस अवसर पर प्रमुख रूप से पूर्व पार्षद प्रोमिला घई, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आनन्दप्रकाश आर्य (हापुड़), तेजपालसिंह आर्य (गाजियाबाद), रविदेव गुप्ता, रामकुमारसिंह आर्य, वेदप्रकाश आर्य, डा. धर्मेन्द्र शास्त्री (पूर्व सचिव संस्कृत अकादमी), हरिआम दलाल (बहादुरगढ़), शिवम मिश्रा, अरूण आर्य, सुनीता बुग्गा, गुरचरन घई, बबली कसाना, नरेन्द्र आर्य, डा. विपिन खेड़ा, दीपक आर्य, अमित आर्य, वेदप्रकाश कुमार आदि उपस्थित थे।

बुधवार, 6 सितम्बर 2017, डा.देवेश प्रकाश आर्य व कविता आर्या की सुपुत्री आयु. स्वस्ति आर्या के प्रथम जन्मोत्सव पर आर्य महिला आश्रम, राजेन्द्र नगर, दिल्ली में समाज के प्रधान श्री अशोक सहगल डा. अनिल आर्य का शाल से स्वागत करते हुए, साथ में माता आदर्श सहगल, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डा.धर्मेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र–भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम जाजू के साथ उनके निवास पर डा.अनिल आर्य।

डा.सत्यपाल सिंह जी के स्वागत के लिये साउथ एवन्यू दूर दूर से पंहुचे प्रतिष्ठित आर्य जन

शोक समाचार : विनम्र श्रद्धाजंलि

1. डा. बलराम राणा (प्रधान, आर्य समाज, आर्य नगर,पहाड़गंज) का निधन।
2. श्रीमती उषा शर्मा (धर्मपत्नि श्री प्रेमप्रकाश शर्मा, देहरादून) का निधन।
3. श्रीमती सुशीला सेठी (देहरादून) का निधन।
4. श्री आनन्द कुमार कपूर (मंत्री, आर्य समाज, पंजाबी बाग विस्तार) का निधन।
5. श्रीमती गंगा देवी (धर्मपत्नि श्री रामस्वरूप शास्त्री, यमुना विहार) का निधन।
6. श्रीमती प्रेमलता पुरी (आर्य समाज रेलवे रोड रानी बाग) का निधन।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेंद्र भगत, मोबाइल : 09958889970